

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855

2. अर्थकाम (wie eben) adj. nach Besitz oder Reichtum Verlangen

tragend N. 17, 43.

अर्थकृच्छ्र (अ० + कृ०) n. ein schwieriger Fall, eine verwickelte Angelegenheit: अर्थकृच्छ्रेषु चैवाहं प्रष्टव्यो नैपुणेषु च N. 15, 3.

अर्थकृत् (अ० + कृत्) adj. Nutzen bringend, nützlich: स चापि ते अर्थकृतात् साधकश्च भविष्यति INDR. 3, 56.

अर्थकृत्य (अ० + कृ०) n. und f. ० त्या eine auf den Nutzen gerichtete Handlung: नित्यं स्थिता अर्थकृत्येषु नित्यं धर्मपरायणा: R. 4, 38, 43. मन्दापत्ते न खलु मुह्यन्मन्युपेतार्थकृत्या: MBH. 39.

अर्थगत (अ० + ग०) adj. = गतार्थ gaṇa आक्षिप्तगत्यादि.

अर्थघ्न (अ० + घ्न) adj. f. ई verschwenderisch M. 9, 80. Jāś. 1, 73.

अर्थज्ञात (अ० + ज्ञात n.) adj. bedeutungsvoll, inhaltsvoll (?) Çāk. 164, v. 1.

अर्थज्ञ (अ० + ज्ञा) adj. die Sache, das Wesen begreifend Nir. 1, 49.

अर्थतम् (von अर्थ) 1) nach einem Ziele hin: प्रदीपवच्चार्थतः वृत्तिः einer Lampe gleich streben sie nach einem Ziele Sāṃkhya. 13. — 2) in der That, in Wahrheit, wirklich R. 6, 98, 20. Mārk. 33, 8. Hit. 1, 179. KATHA. 17, 76. — 3) wegen, am Ende eines comp.: तत्सर्वमुद्गार्थतः PAÑKAT. 1, 286.

अर्थद् (अ० + द्) adj. 1) Nutzen bringend KATHA. 17, 122. — 2) freigebig M. 2, 109.

अर्थद्रूपण (अ० + द्रू०) n. ein Angriff auf fremdes Eigenthum H. 738.

M. 7, 48. 51. Hit. III, 114.

अर्थना (von अर्थ) f. das Bitten AK. 2, 7, 32. 3, 3, 6. 4, 226. H. 388.

अर्थनिश्चय (अ० + नि०) m. Entscheidung, Bestimmung AK. 3, 4, 32, 12.

अर्थनीय (von अर्थ) adj. zu verlangen, zu fordern: तन्मया — वत्सकाशोद्गोत्रनमर्थनीयम् PAÑKAT. 61, 21. किमतः परमर्थनीयम् BHART. 3, 69.

अर्थपति (अ० + प०) m. Herr der Schätze: 1) König MED. 1, 177.

PAÑKAT. I, 84. III, 89. RAGH. 1, 59. 2, 46. 9, 3. 18, 1. — 2) Kuvera MED.

— 3) N. pr. eines Mannes Z. d. d. m. G. 7, 382.

अर्थप्रयोग (अ० + प्र०) m. das Ausleihen von Geld auf Zinsen, Wucher AK. 2, 9, 4. H. 880.

अर्थबन्ध (अ० + ब०) m. das Band der Begriffe, Worte, Text Çāk. 164.

अर्थमात्र (अ० + मा०) n. f. Vermögen, Geld: भोजनाच्छादनाभ्यधिकं स्वल्पमप्यर्थमात्रं न संपद्यते. PAÑKAT. 132, 25. कार्यं मयास्तेयमर्थमात्रा कृत्तव्या 33, 5 (vgl. मकृती वित्तमात्रा 32, 24). अर्थमात्रास्ति नः पुनः KATHA. 24, 125.

अर्थम् (von अर्थ), अर्थयते (अर्थते ep.) bitten DRAUP. 33, 51. 1) nach Etwas streben, verlangen, wünschen, fordern: यदा नैः सूनृतीवतः कार् अर्थयास इत् RV. 1, 82, 1. उमा उ नूनं तदिदं यये 10, 106, 7. वैन्यं गत्वा मलात्मानमर्थयस्व धनं बहु MBH. 3, 12681. तिमर्थये PAÑKAT. 251, 4. तमनिक्रम्य सर्वे ऽथ वयं चार्थामहे वसु 8613. अर्थित n. Wunsch: अर्थितमीयिवान् VOP. 3, 26. Vgl. अर्थनीय und अर्थितव्य. — 2) Jmd (acc.) mit einer Bitte oder Forderung angehen: अर्थितो ह्यस्मि कैनेत्या वनं गच्छेति R. 2, 34, 49. KATHA. 3, 76. 5, 53. तैरेव चार्थयमानः 22, 253. प्रकृस्तमर्थयो चक्रे यो-हुम् BHATT. 14, 88. mit dem acc. der Sache: तमर्थये मोक्षम् VOP. 3, 6.

— अग्नि Jmd (acc.) um Etwas bitten: अर्थयन्नेशा देवेशममोयार्थम् (um) MBH. 3, 16990. ततो ऽहं तामपि त्रैवाश्रयमर्थयितवती PRAB. 109, 18. इमं तावत्प्रियाप्रवृत्तये (um) सारंगमासीनमर्थयये VIKR. 68, 9. कन्या त्वा भर्तुवे (Gatte zu sein) ऽर्थययिष्यति (sic) KATHA. 26, 148. अर्थयत्य राजा-

नम् 5, 5. 4, 80. BHATT. 6, 3. अर्थयति gebeten M. 2, 189. PAÑKAT. 186, 25.

236, 21. RAGH. 4, 58. यथाभ्यर्थितमनुतिष्ठन् thwend wie er gebeten war Çāk.

103, 19. उभयाभ्यर्थितेन auf Bitten beider Theile Jāś. 2, 88. — Vgl. अभ्यर्थन fgg.

— प्र 1) nach Jmd oder Etwas (acc.) begehren, verlangen, um Etwas bitten: सर्वान्कामांश्चन्दतः प्रार्थयस्व KATHOP. 1, 25. प्रार्थयस्व हृदयवाञ्छितम् PAÑKAT. 233, 22. कामं प्रार्थयसे यं त्वं मतः MBu. 1, 8127. ऐन्द्रं प्रार्थयति स्थानम् 3, 10916. स्वर्गतिं प्रार्थयते BHAG. 9, 20. R. 2, 33, 27. BHATT. 7, 48. अर्जुनेन विनाशं हि तत्र — प्रार्थयानो रणे MBH. 3, 16989. अमृतं प्रार्थयानस्य R. 2, 23, 31. अनेन वीर्येण कथं प्रार्थयसे स्त्रिये वलात् DRAUP. 8, 58. mit dem inf.: आदातुं चात्प्य वित्तानि प्रार्थयते MBH. 3, 1037. 14239. act.: उत्सृष्टमामिषं भूमौ प्रार्थयति यथा खगाः । प्रार्थयति जनाः सर्वे पतिकृतां तथा स्त्रियम् BRĀHMAN. 2, 12. 16. SUND. 4, 12. N. 2, 22. 13, 43. MBH. 3, 2600. PAÑKAT. III, 238. पार्थ प्रार्थय INDR. 5, 33. गावस्तृणमिवारण्ये प्रार्थयति (स्त्रियः) नयं नवम् Hit. I, 189. pass.: प्रार्थ्यतां किञ्चिदीष्टम् PAÑKAT. 250, 7. Çāk. 70, 2. RAGH. 7, 64. BRĀHMAN. 2, 11. 13. प्रार्थित SUND. 1, 26. Sāv. 1, 30. किमिदं प्रार्थितं कर्तुम् was füllt dir ein zu thun? N. 19, 14. प्रार्थितार्थसिद्धयः Çāk. 41, 11. वृष्टिं यत्प्रार्थितं (Wunsch) तुभ्यं कार्यमागमनं प्रति R. 4, 10, 22. एकाप्सरःप्रार्थितयोः der Beiden, deren Verlangen auf eine und dieselbe A. gerichtet ist RAGH. 7, 50. प्रार्थितदुर्लभं ersehnt aber schwer zu erlangen KUMĀRA. 5, 46. 61. — 2) Jmd (acc.) mit einer Bitte angehen, med.: तेन भवतं प्रार्थयते Çāk. 28, 11. रघूत्तमम् — प्रार्थयो चक्रे प्रियाकर्तुम् BHATT. 4, 19. mit dem acc. der Sache: रामम् — अहं धनमनतं हि प्रार्थये MBH. 1, 5126. प्रार्थयो चक्रे (ohne obj.) PAÑKAT. 251, 22. act.: अर्थी त्वां प्रार्थयाम्यथ कुरुष्व वचनं मम R. 3, 40, 6. स राजानम् — प्रार्थयिष्यति — अथपत्यो ऽस्मि मे कन्यां सखे दातुमर्हसि 1, 10, 4. 5. pass.: नोपचारयिष्यष्टः कृपाणः प्रार्थयते जनः Hit. I, 127. हरिदत्तो ऽपि ब्राह्मणेनैकानागत्य प्रार्थितः VER. 36, 4.

— अभिप्र begehren: यदभिप्रार्थितं मया R. 2, 11, 3.

— संप्र act. bitten: भृशं संप्रार्थयामास R. 2, 112, 14. संप्रार्थयामास नगेन्द्रवर्यम् MBH. 3, 12334. इमे तैर्विचित्रैरुपभिः संप्रार्थिता कृत्तुम् 5, 18.

— प्रति act. zum Kampf herausfordern: संध्ये प्रार्थयत रावयम् BHATT. 6, 25. Sch.: = प्रत्यर्थिनं कुरुत.

— सम् 1) bereit machen: अस्मभ्यं तदसौ दानाय राधः समर्थयस्व RV. 2, 13, 13. — 2) urtheilen, bei sich denken: स्वजनेभ्यः मुनविनाशकारणं श्रुत्वा तथैव समर्थितवान् PAÑKAT. 173, 3. एवं समर्थितवान् 183, 2. KATHA. 24, 210. — 3) auf Etwas sinnen: मदोपे संप्रहारे ऽस्मिन्वीरयानं (so ist zu lesen) समर्थयताम् R. 4, 9, 72. वसाचले ऽस्मिन् — समर्थयन् शत्रुवधे समर्थयन् 26, 25. अथपत्योऽपि दाने यत्तमापदि त्वं समर्थये MBH. 1, 4666. — 4) beurtheilen, für Etwas halten: इदमन्यपरायणमन्यथा — हृदयं मम यदि समर्थये Çāk. 67. अनुपयुक्तमिवात्मानं समर्थये 97, 3. उभयमप्यपरितोषं समर्थये ich halte Beide für unbefriedigt 4. भवता समर्थये वीर्यप्रद्वृत्तिव भयमात्मनः RAGH. 11, 72. मनसा समर्थितं आपत्प्रतीकारः वित्तं मनोव्यानप्रवेशः VIKR. 20, 9. समर्थये यत्प्रथमे प्रियं प्रति was ich vorher für die Geliebte hielt 132. नान्यं दैवात्समर्थये R. 2, 22, 18. — 5) in Betracht ziehen: नम वृत्तं च शीलं च सर्वं ते न समर्थितम् R. 6, 101, 17. — 6) für gut halten, beschliessen: वैरिद्वामस्तत्तवारण्ये मिथो राम समर्थितः ॥ अहं विवासायिव्यामि तानेवाथ R. GORR. 2, 20, 26.